Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

प्राचीन ज्ञान प्रणाली में गृहस्थ आश्रम का समाज में योगदान

प्रिया सिंह*

***शोधार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.) भारत**

शोध सारांश – प्रस्तुत लेख में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में गृहस्थ आश्रम के सामाजिक, महत्व का वर्णन किया गया है। गृहस्थ आश्रम को सभी आश्रमों का आधार माना गया है, क्योंकि यही परिवार, समाज और अर्थव्यवस्था का संचालन करता है। इसके माध्यम से कृषि, व्यापार, संस्कार, शिक्षा, दान, सेवा तथा सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण होता है। परिवार बच्चों में नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करता है। आधुनिक समय में संयुक्त परिवारों के विघटन के बावजूद गृहस्थ आश्रम की शिक्षाएँ पारिवारिक एकता, सामाजिक समरसता, नैतिकता और संतुलित जीवन के लिए आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

शब्द कुंजी – गृहस्थ आश्रम, समाज, महाभारत, गीता।

प्रस्तावना – भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा में मानव जीवन को चार आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासकृमें विभाजित किया गया है। इनमें गृहस्थ आश्रम को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि यही आश्रम समाज, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और धर्म की आधारशिला है। मनु ने तो यहां तक कहा है कि जिस तरह वायु का आश्रय लेकर सब जीव–जन्तु जीते हैं, उसी प्रकार गृहस्थ का आश्रय लेकर सभी आश्रम जीवन प्राप्त करते हैं। जैसे सभी छोटी–बड़ी नदियां अन्त में समुद्र में ही स्थायी रूप से विश्राम पाती हैं उसी तरह सब आश्रमों के व्यक्ति गृहस्थ के हाथों सुरक्षा एवं स्थायित्व प्राप्त करते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था– 'गृहस्थ सारे समाज की नींव सादृश्य है। सम्पूर्ण समाज उसी से साधन प्राप्त करता है।' मनुस्मृति तथा महाभारत में गृहस्थ आश्रम को समाज के पालन–पोषण और संतुलन का केंद्र बताया गया है। यह केवल पारिवारिक जीवन तक सीमित नहीं था, बल्कि सामाजिक उत्तारदायित्व, आर्थिक उत्पादन, सांस्कृतिक संरक्षण और नैतिक मूल्यों के संवर्धन का प्रमुख माध्यम था। यह शोधलेख गुणात्मक अनुसन्धान दृष्टिकोण से गृहस्थ आश्रम के सामाजिक योगदान का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

1. गृहस्थ आश्रम की अवधारणा– भारतीय दर्शन में आश्रम व्यवस्था का उद्देश्य व्यक्ति और समाज दोनों का समन्वित विकास था। गृहस्थ आश्रम वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति विवाह करके परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करता है। 'अर्थशास्त्र में गृहस्थ के निम्नलिखित कर्तव्य बताये गये हैं। अपने धर्म के अनुकूल जीविकोपार्जन करना, विधिपूर्वक विवाह करना, अपनी विवाहिता पत्नी से ही सम्पर्क रखना, देवताओं, पितरों, भृत्यों आदि को खिलाने के बाद बचे हुए अन्न को ग्रहण करना।' 'मनुस्मृति में गृहस्थ के दस धर्मों का वर्णन मिलता है–धृति, क्षमा, अस्तेय, दम, शौच, इन्द्रिय, निग्रह, ज्ञान, विद्या, सत्य तथा क्रोध न करना।'

गृहस्थ आश्रम की प्रमुख विशेषताएँ धर्म, अर्थ और काम का संतुलन, परिवार संस्था का निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व, आर्थिक उत्पादकता, दान और सेवा भावना है।

2. प्राचीन ज्ञान प्रणाली में गृहस्थ आश्रम का स्थान– ऋग्वेद, उपनिषद और भगवद्गीता में गृहस्थ जीवन को संयम और कर्तव्य का जीवन बताया गया है। मनुस्मृति के अनुसार 'गृहस्थ आश्रम ही अन्य सभी आश्रमों का पालनकर्ता है।' इसका आशय है कि गृहस्थ व्यक्ति अपने श्रम और संसाधनों सेकृविद्यार्थियों का पालन करता था,संन्यासियों को भिक्षा देता था, समाज में आर्थिक गतिविधियों को संचालित करता था। इस प्रकार गृहस्थ आश्रम सामाजिक संरचना की धुरी था।

3. समाज में गृहस्थ आश्रम का योगदान

(क) आर्थिक योगदान– गृहस्थ आश्रम का सबसे महत्वपूर्ण योगदान आर्थिक क्षेत्र में था। प्राचीन भारत की कृषि, व्यापार, पशुपालन और हस्तशिल्प गतिविधियाँ मुख्यत: गृहस्थों द्वारा संचालित होती थीं। मुख्य योगदान कृषि उत्पादन व्यापार और वाणिज्य रोजगार सृजन कर व्यवस्था में योगदान वैदिक काल में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का केंद्र गृहस्थ परिवार ही था।

(ख) सामाजिक योगदान – गृहस्थ आश्रम ने सामाजिक संगठन को स्थिरता प्रदान की। परिवार संस्था के माध्यम से बच्चों का पालन–पोषण, संस्कारों का विकास, बुजुर्गों का सम्मान, सामाजिक एकता का निर्माण होता था। संयुक्त परिवार प्रणाली भारतीय समाज की विशेषता थी, जो गृहस्थ जीवन की देन थी।

(ग) सांस्कृतिक योगदान – भारतीय संस्कृति, परंपरा और लोकाचार के संरक्षण में गृहस्थ आश्रम की केंद्रीय भूमिका थी। उदाहरण 'त्योहारों का आयोजन, वैदिक अनुष्ठान, लोककला और संगीत का संरक्षण' भाषा और साहित्य का संवर्धन, दीपावली तथा होली जैसे पर्व पारिवारिक और सामाजिक एकता को मजबूत करते थे।

(घ) नैतिक एवं आध्यात्मिक योगदान– गृहस्थ आश्रम केवल भौतिक जीवन नहीं थाय यह नैतिक और आध्यात्मिक अनुशासन का भी केंद्र था। मुख्य मूल्यकृ सत्य, अहिंसा, सेवा, दान, अतिथि सत्कार, रामायण में श्रीराम

का पारिवारिक आदर्श गृहस्थ जीवन के नैतिक स्वरूप को दर्शाता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में गृहस्थ आश्रम की प्रासंगिकता– भारतीय समाज में गृहस्थ जीवन आज भी सामाजिक संरचना का मुख्य आधार है। परिवार, विवाह और आपसी रिश्ते समाज को जोड़े रखते हैं। हालांकि आधुनिकीकरण के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं और एकल परिवार बढ़ रहे हैं, फिर भी पारिवारिक मूल्य और नातेदारी के बंधन अब भी मजबूत बने हुए है।

1. **परिवार सामाजिक सुरक्षा का केंद्र है:** भारतीय परिवार आज भी आर्थिक और भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करता है।
2. **संस्कारों का हस्तांतरण :** बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास मुख्यत: परिवार के माध्यम से होता है।
3. **सामाजिक सहयोग की भावना:** गृहस्थ व्यक्ति विवाह, उत्सव और संकट के समय सामुदायिक सहयोग प्रदान करता है।
4. **आर्थिक स्थिरता :** परिवार आधारित आर्थिक संरचना आज भी भारतीय समाज की मजबूती है।
5. आधुनिक समय में भौतिकवाद और व्यक्तिवाद के कारण पारिवारिक संरचना कमजोर हो रही है। ऐसे समय में गृहस्थ आश्रम की अवधारणाकृपारिवारिक एकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक मूल्यों, तथा संतुलित जीवन शैली की प्रेरणा देती है। यह अवधारणा 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की भावना को भी सशक्त बनाती है।

निष्कर्ष – प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में गृहस्थ आश्रम समाज का आधार स्तंभ था। यह केवल वैवाहिक जीवन नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उत्तरदायित्वों का समन्वित स्वरूप था। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि गृहस्थ आश्रम ने समाज को स्थिरता प्रदान की, संस्कृति का संरक्षण किया, आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा दिया, तथा नैतिक मूल्यों को पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित किया। आज के समय में भी गृहस्थ आश्रम की शिक्षाएँ सामाजिक समरसता और संतुलित जीवन के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

संदर्भ ग्रंथ एवं एंडनोट सूची:–

1. भगवद्गीता
2. महाभारत
3. रामायण
4. उपनिषद
5. ऋग्वेद

i. मनुस्मृति 4/1
ii. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व / पं. श्री राम शर्मा / पेज ६ 4.38
iii. अर्थशास्त्र 1.2
iv. https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/97218/1/Unit-5.pdf
v. https://renaissance.aurosociety.org/g%E1%B9%9Bhasthadharma-the-dharma-of-a-householder/

****